रात्री क्लास ओमशांति 19.8.67

(सेमिनार के प्वाइंट्स सुना रहे थे क्लास में) सेमिनार में प्वाइंट्स वही हैं जो सदैव चलती रहती है। बच्चों की बुद्धि में है हमको क्या समझाना है। मुख्य बात है समझाने की। बाप का परिचय देना है और 84जन्मों की कहानी सुनानी है। यह तीजरी की कथा है। सत्य नारायण की कथा है। अमरकथा है। एक ही कथायें भक्तिमार्ग में सुनते आये हैं। अब बच्चों का सारी ड्रामा का मालूम है। सतयुग–त्रेता में राजाई है। वहां कथा,स्तुति,भक्ति आदि कुछ भी नहीं है। अभी पूछा जाता है किसकी भक्ति करते हो। राधे–कृष्ण की भक्ति अक्सर करके सभी करते हैं। भक्ति उन्हों की होती है। शिव की भी भक्ति होती है। कृष्ण ने सत्य नारायण की कथा सुनाई यह हो नहीं सकता। कृष्ण कैसे सुनावेंगे?जबकि खुद ही नारायण हैं। उन्हों को पता नहीं है कि राधे–कृष्ण ही लक्ष्मी–नारायण हैं। नहीं तो विचार उठे कि छोटेपन में इतनी चंचलता फिर ज्ञान देवें,यह बात ही नहीं मिलती। लक्ष्मी–नारायण तो राजा–रानी हैं। वह फिर राजयोग सिखाय न सके। भक्तिमार्ग में मूंझ बहुत है। कृष्ण की आरती करते हैं तो कहते हैं जय जगदीश हरे। अब जगदीश ठीक है। बाकी हरे तो दुःखहर्ता फिर कृष्ण नहीं हो सकता। दुःख में देवताओं की पूजा करते हैं। तुम बच्चों को मालूम नहीं है शिवबाबा से क्या मांगना है। बाप सब कुछ बच्चों को समझाते रहते हैं। प्रश्न पूछने की भी दरकार नहीं रहती। देवता बनना है तो आसुरी गुण खतम करना चाहिए। मनुष्य में है अवगुण। देवताओं में है गुण। देवतायें किसको सिखाय नहीं सकते। यह दुःख हर नहीं सकते। सिवाय तुम बच्चों के और कोई समझाय नहीं सकते। और तुमको मिला है बाप समझाने वाला। कल्प पहले भी बाप ने समझाया , अभी भी बाप समझाते हैं। इस प्रैक्टिकल बात की फिर कहानी बनती है। संगम पर है प्रैक्टिकल। भक्तिमार्ग में फिर उनकी कहानी बनती है। कहानी सुनाने वाले लक्ष्मी–नारायण भी नहीं। पास्ट,प्रेजेंट और फ्यूचर को बाप के सिवाय कोई और नहीं जानते। प्रदर्शनी में भी यह लिखना चाहिए। दुनियां का पास्ट ,प्रेजेंट ,फ्यूचर आकर समझो। फीचर्स कब कोई बताय न सके। तुम जानते हो अब सतयुग आ रहा है। लड़ाई होगी, आगे क्या होगा वह कोई नहीं जानते। आदि,मध्य,अंत का राज सिर्फ तुम संगम पर ही समझते हो। आकर सृष्टि की आदि,मध्य,अंत की हिस्ट्री–जॉग्राफी समझो। चक्र को समझो तो सतयुग का चक्रवर्ती राजा बन जावेंगे। सतयुग के लिए पवित्र जरूर बनना पड़ेगा। सृष्टि की आदि,मध्य,अंत को समझने से सतयुगी चक्रवर्ती विश्व का महाराजा बन सकते हो। ऐसे विचार करना चाहिए कैसे किसको समझावें। सच्चे साहब को याद करो तो उनसे सुख मिल सकता है। बाप को याद करने से सच्च खण्ड स्वर्ग का मालिक बन सकते हो। बाप कहते हैं मैं तुमको रियल परिस्तान के(का) परी बनाते(बनाता) हैं(हूं) । परिस्तान नहीं तो कब्रिस्तानं इस समय ऐसी नैचुरल ब्यूटी नहीं है। माया ने कबदाखिल कर दिया है। सतयुग में नैचुरल खूबसूरत होते हैं। फीचर्स बहुत अच्छी है। इस दुनियां का परिस्तान नहीं कहेंगे। यह सब सुनना,सुनाना भी तुम्हारा धंधा है। और कोई इन बातों को नहीं समझते। आत्मा प्योर नहीं है तो शरीर भी प्योर मिल न सके। तुम ईश्वर के अंत में गये हो। चीज है और अंत नहीं पाया जाता तो वह चीज क्या काम की?हम क्यों याद करते हैं जबकि अंत नहीं पाया जाता है। तुम अब कहेंगे हमने अंत पाया है। ईश्वर को भी जानते हैं ,उनके पार्ट को भी जानते हैं। ज्ञान बहुत रमणीक और गुह्य है। बाप ही सूर्यवंशी राजधानी स्थापन करते हैं। पुरुषोत्तम संगमयुग को कोई भी नहीं जानते हैं। तुम बच्चों को बताना होता है। पुरानी दुनियां का विनाश ,नई दुनियां की स्थापना। पुरानी और नई दुनियां का यह संगम है। बाप को भी संगम पर ही आना होता है। आगे चलकर सभी को पता पड़ेगा। बच्चों को खुशी भी होती है। जो अच्छी रीत पढ़ते हैं उनकी खुशी भी जास्ती होगी। कम पढ़ने वालों को भी खुशी भी कम। अच्छा, बच्चों को यादप्यार ,गुडनाइट।